B.A. Part - III, HISTORY (Hons.)

Paper - V - HISTORY OF India, 1757-1857

(a) Land Revenue Settlement - Permanent Settlement

Dr. Amrita Kumari

स्थायी बंदोबस्त (इस्तमरारी बंदोबस्त)

पृष्ठभूमि (1765-1793) | उद्देश्य | विशेषताएँ | प्रस्ताव/समीक्षा | निष्कर्ष

द्वैध शासन | वारेन हेस्टिंग्स के समय नीलामी प्रणाली

पृष्ठभूमि :— ब्रिटिश भू राजस्व व्यवस्था के तहत लाई गई विभिन्न प्रणालियों में स्थायी बन्दोबस्त 1793 ई० में लॉर्ड कार्नवालिस के समय मुख्यतः पूर्वी भारत के क्षेत्रों में लागू किया गया पर इस व्यवस्था को लागू करने के पीछे अनुभवों एवं नीतियों की लम्बी पृष्ठभूमि रही है; जैसे — द्वैध शासन के प्रयोग की असफलता, वारेन हेस्टिंग्स द्वारा द्वैध शासन को समाप्त कर नीलामी व्यवस्था। (1772 में पंचवर्षीय, 1776 ई० में इसे समाप्त कर एकवर्षीय प्रणाली)

उद्देश्य :—

- स्थायी राजस्व की प्राप्ति करना।
- प्रशासनिक सुविधा के लिए क्योंकि कंपनी के पास प्रशासनिक अनुभव का अभाव
- राजनीतिक रूप से एक समर्थक वर्ग का विकास करना।
- कृषि का विकास, जमींदारों द्वारा कृषिक्षेत्र में नए प्रयोग।
- औपनिवेशिक उद्देश्यों की पूर्ति का माध्यम क्योंकि भारतीय जमींदारों की पूँजी का भूमि में निवेश

Scanned with CamScanner

विशेषताएँ :—

i) लगान वसूली का अधिकार जमींदारों को दिया गया। 1790 में वार्षिक लगान के स्थान पर 10 वर्षीय लगान व्यवस्था लागू किया गया, जिसे 1793 ई० में स्थायी कर दिया गया।

ii) जमींदारों को भू-स्वामी माना गया। भू-स्वामित्व का अधिकार भू-राजस्व की अदायगी था।

iii) राजस्व की कर का विभाजन स्पष्टतः सरकार और जमींदारों के बीच किया गया। सरकार के लिए राजस्व का 10/11 तथा जमींदारों के लिए 1/11 निश्चित किया गया।

iv) यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा, बनारस में लागू की गई जो कुल क्षेत्र का 19% थी।

v) कृषकों की स्थिति किरायेदार के रूप में स्वीकार की गई। भूमि पर उन्हें किसी प्रकार का अधिकार नहीं था।

vi) जमींदारों के लिए सूर्यास्त कानून।

स्थायी बंदोबस्त का प्रभाव

1 सकारात्मक प्रभाव/लाभ :—

ब्रिटिशों के लिए :—

- सरकारी आय निश्चित होना क्योंकि वर्षा कम या अधिक पड़ने से राज्य की आय घटती या बढ़ती नहीं थी।
- निश्चित आय के कारण आर्थिक-प्रशासनिक योजनाओं के निर्माण में सुविधा।

Scanned with CamScanner

• लगान वसूली कार्य पर बहुत धन खर्च होता है, अब यह अपव्यय भी समाप्त हो गया।

• लगान वसूली में लगी बड़ी संख्या में कंपनी के कर्मचारियों को अन्य प्रशासनिक कार्यों में लगाकर प्रशासनिक गतिशीलता आ गई।

• राजनीतिक रूप से जमींदार वर्ग ने कंपनी के हितों को सुरक्षित रखने में मदद की और 1857 ई० के अनुभव से साबित होता है। अतः यह वर्ग कम्पनी प्रशासन का शुभचिंतक बन गया।

भारतीयों के लिए :—

• भारतीय जमींदारों का जमीन पर पैतृक स्वामित्व कायम हो गया। इससे उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।

• राजस्व वसूली का एक निश्चित अंश मिलने से उनकी आय नियमित हो गई।

• स्थायी लगान के निर्धारण से अतिरिक्त उत्पादन और अधिक वसूली का पूरा लाभ जमींदारों को मिला।

• कृषि क्षेत्र में वाणिज्यीकरण को बढ़ावा मिला क्योंकि नकद लगान पर जोर दिया जाता था।

2. नकारात्मक प्रभाव / हानि —

• बंदोबस्त के स्थायी हो जाने से उत्पादन और वसूली में जो भी वृद्धि हुई, उसका लाभ सरकार को नहीं मिला।

• जमींदारों द्वारा किसानों का भरपूर शोषण करने से ब्रिटिशों को कृषक विद्रोहों का सामना करना पड़ा।

Scanned with CamScanner

- जैसे किसान जमींदारों के रैयत वैसे ही जमींदार कंपनी के रैयत बन गए। विभिन्न प्रकार के नियमों (1793 का सम्पतिजन्य नियम, 1794 का सूर्यास्त कानून) के द्वारा जमींदारी अधिकारों पर प्रतिबंध।
- सामाजिक विभेद बढ़ा (सुविधा सम्पन्न वर्ग व सुविधा विहीन वर्ग)
- अत्यधिक लगान दर, भूमिकर की नकद वसूली, जमींदारों के कठोर नियम आदि के कारण दरिद्रता एवं अकाल की स्थिति।
- जोतों का उपविभाजन व विखंडन की प्रक्रिया तेज, जिसके कारण कृषि का विकास अवरुद्ध हुआ तथा साहूकारों का प्रभाव बढ़ा।
- इस व्यवस्था के तहत उपसामंतीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत हुई क्योंकि बहुत अधिक लगान निर्धारित के कारण पुराने जमींदार भूमि से वंचित हुए, भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया शुरू हुई और बिचौलियों का भूमि संबंध में प्रवेश हुआ।
- इस व्यवस्था ने दुखासी या अनुपस्थित जमींदारी प्रथा को जन्म दिया
- भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया आसान एवं व्यक्तिगत सम्पति की अवधारणा विकसित।

लॉर्ड विलियम बेंटिक के शब्दों में — कई महत्वपूर्ण बातों में असफल रहने के बावजूद स्थायी बंदोबस्त ने भूमि - स्वामियों का ऐसा विशाल संगठन खड़ा किया, जो दृढ़ दिल से यह चाहता है कि अंग्रेजी साम्राज्य बना रहे।

Scanned with CamScanner